International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 252-259

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 252-259
www.allresearchjournal.com
Received: 10-07-2016
Accepted: 11-08-2016

ममता असवाल
शाधे छात्रा, शिक्षा सकांय, हेमवती नन्दन बहुगुणा (केन्द्रीय) वि०वि०, श्रीनगर (गढ़वाल)

Correspondence
ममता असवाल
शाधे छात्रा, शिक्षा सकांय, हेमवती नन्दन बहुगुणा (केन्द्रीय) वि०वि०, श्रीनगर (गढ़वाल)

माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

ममता असवाल

सारांश
मनुष्य एक सृजनशील प्राणी है। हर मनुष्य में सृजन करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इसका प्रदर्शन वह बाल्यकाल से ही करने लगता है। वह अपनी जरूरत के अनुसार कुछ न कुछ बनाता है। मूल प्रवृत्ति होने के कारण उसे पृथक से सीखना भी नही पडता है। वह अपने आसपास की परिस्थितियों से सृजन की शक्ति को विकसित कर लेता है। सृजन मनुष्य के भीतर छिपी प्रतिभा, सौदर्य व कल्पना को साकार रूप देने का सशक्त माध्यम भी है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक मनुष्य कुछ न कुछ नया सृजन करता ही जा रहा है।अतः सृजन प्रवृत्ति का मानव जीवन में बडा महत्वपूर्ण स्थान है, बच्चों में सृजन की मौलिक क्षमता होती है इसके लिए केवल उचित वातावरण देने की आवश्यकता है। प्रारम्भ में भले ही उनके द्वारा सृजित वस्तु, चित्र, आकृति आकर्षक न हो कालांतर में अपने कौशलों को विकसित कर एक दिन वे सिद्वहस्त हो सकते है।

कुट शब्दः सृजनात्मकताए पारिवारिक वातावरण

प्रस्तावना
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बालक के समाजीकरण के विभिन्न तत्वों में परिवार का प्रमुख स्थान है, परिवार वह संस्था है जिसमें बालक का जन्म होता है, विकास होता है, और उसी में इउसका अन्त होता है। परिवार शिक्षा का अनौपचारिक साधन है और इतना होते हुये भी इसका महत्व अपने में अत्यधिक है, दो बच्चे भले ही एक विद्यालय में पढ़ते हो, समान रूप से शिक्षकों से प्रभावित होते हो, समान व्यवहार करते हो, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान, रूचियों, भाषण, व्यवहार और नैतिकता में अपने के कारण, जहाँ से वे आते हैं। पूर्णतया भिन्न होते हैं।
मान्टेसरी ने बालक की शिक्षा में घर के महत्वपूर्ण योगदान का अनुभव किया है, उन्होंने विद्यालय को बचपन का घर कहा है। घर ही वह स्थान है जहाँ से महान गुण विकसित होते हैं, जिनकी सामान्य विशेषता ''सहानुभूति'' है घर में ही अगाध प्रेम की भावना का विकास हेाता है।यहाँ पर वह उदारता अनुदारता, स्वार्थ–निस्वार्थ न्याय–अन्याय, सत्य–असत्य, परिश्रम–आलस्य में अन्तर सीखता है इनमें से कुछ की आदत घर में पड़ जाती है बालक की शिक्षा उसके घर में प्रारंभ होती है। जब वह अन्य व्यक्तियों के कार्यों को देखता है। उनका अनुसरण करता है और उनमें भाग लेता है। वह अनौपचारिक रूप से शिक्षित किया जाता है। प्रायः सभी बच्चे सृजनशील होते है। एक दम ठीक –ठीक यह कह पाना कि कौन ज्यादा या कम सृजनशील है? तत्काल बताना कठिन है। पर बच्चों के साथ बैठकर उन्हे प्रोत्साहित करके परखा जा सकता है। उनकी मूल प्रवृत्तियों व अभिरूचियों को जाना जा सकता है। यदि वह बोलकर बता दे तो काम सरल हो सकता है, अन्यथा सतत संपर्क में रहकर ही जाना जा सकता है। सृजन का सीधा सा अर्थ ष्कुछ नया बनाना है। परन्तु इसका अभिप्राय व्यापक है, हर प्रकार का नवनिर्माण सृजनात्मकता के भीतर समाहित है। अतः अध्यापकों तथा माता–पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे बालकों की सृजनात्मक योग्यता के विकास के लिए उचित वातावरण तथा स्थितियों की व्यवस्था करें। यह समस्या कठिन अवश्य है परन्तु इसका समाधान भी है । उचित अभिप्रेरणा तथा परिस्थितियों द्वारा सृजनात्मक योग्यताओं को विकसित किया जा सकता है। मौलिकता, लचीलापन, प्रवाहात्मक विचारधारा, विविध चिंतन, आत्मविश्वास सतत् परिश्रम, संवेदनशीलता सबंन्धों को देखने तथा बनाने की योग्यता – आदि कुछ ऐसी योग्यताए है जिनका विकास सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्व हो सकता है।
गांधी, लिकंन, भाभा, न्यूटन, शेक्सपीयर, बर्ट्रेण्ड रसेल, लियानार्डो, डा0 विन्सी आदि सृजनात्मक व्यक्ति थे। जिन्होने अपने–अपने क्षेत्रों में विशिष्ट ख्याति प्राप्त की। इसमे कोई संदेह नही कि उनमे ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा थी। परन्तु प्रतिभात्मक योग्यताओं के विकास में शिक्षा तथा वातावरण के प्रभाव की भी अवेहलना नही की जा सकती अच्छी शिक्षा अच्छी देखभाल, सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए

अवसरों की व्यवस्था, सृजनात्मकता को अंकुरित एंव पोषित करती है। इसमें माता–पिता , समाज, तथा अध्यापक अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे बच्चों के पालन–पोषण तथा उनकी सृजनात्मक योग्यताओं के विकास मे सहायता दे सकते हैं अतः शिक्षा प्रकिया औपचारिक तथा अनौपचारिक का उद्देश्य बच्चो में सृजनात्मक योग्यताओ का विकास होना चाहिए। इसके लिए अध्यापकों तथा माता–पिता को सृजनात्मकता के विकास के साधनों का परिचय प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के बालकों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर की बालिकाओं की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के बालकों की सृजनात्मकता पर उनके परिवार के वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नही पडता।
2. माध्यमिक स्तर के बालिकाओं की सृजनात्मकता पर उनके परिवार के वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नही पडता।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत जिला देहरादून के ब्लॉक विकासनगर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 वी के 160 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ती द्वारा प्रतिचयन की क्रमबद्ध यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है, न्यादर्श के रूप में 160 बच्चो का चयन किया गया जिसमें 80 लड़के व 80 लड़कियों को सम्मिलित किया गया।

तालिका– 01

	विद्यालय A	विद्यालय B	विद्यालय C	विद्यालय D	विद्यालय E	विद्यालय F	विद्यालय G	विद्यालय H	योग
छात्र	10	10	10	10	10	10	10	10	80
छात्राएं	10	10	10	10	10	10	10	10	80
योग	20	20	20	20	20	20	20	20	160

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया है जो निम्न है:

1.हरप्रीत भाटिया एव एन0के0 चड्डा का पारिवरिक वातावरण स्केल

2.डा0 के0एन0शर्मा द्वारा निर्मित अपसारी उत्पादन योग्यताएं परीक्षा

प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

Ho 1: ''माध्यमिक स्तर की बालिकाओं की सृजनात्मकता पर उनके परिवार के वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता'' (सारणी–1)

पारिवारिक वातावरण की उपइकाई सम्बद्धता (Cohesion) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

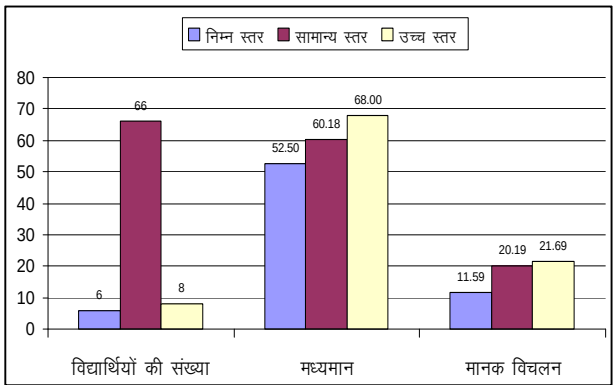

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	839.67	419.84	1.061	.351
आन्तरिक	77	30471.32	395.73		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। सभी स्तरों पर छात्राओं की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर उपस्थित है। अर्थात सम्बद्धता के आधार पर सभी छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर पाया गया।

(सारणी–2)

उपइकाई अभिव्यक्ति (Expressiveness) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एंव उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

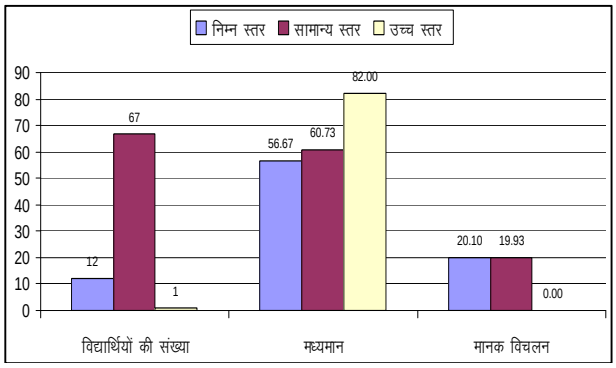

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	641.16	320.58	.805	.451
आन्तरिक	77	30669.83	398.31		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। सभी छात्राओं की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर है, निम्न, मध्यम व उच्च अभिव्यक्ति के कारण छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर पाया जाता है।

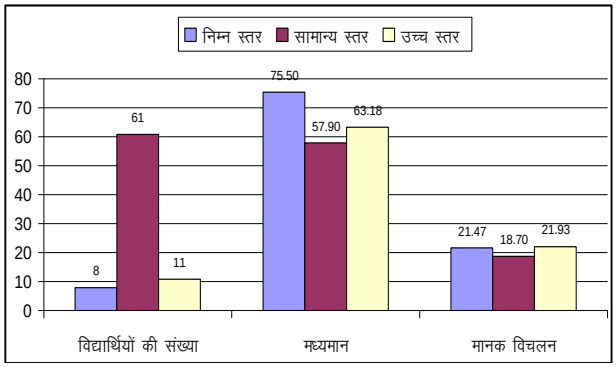

(सारणी–3)

उपइकाई द्वन्द्व (Conflict) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	2289.94	1144.97	3.038	.054
आन्तरिक	77	29021.05	376.89		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। सभी छात्राओं के पारिवारिक वातावरण स्तरों एवं परस्पर सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर है।

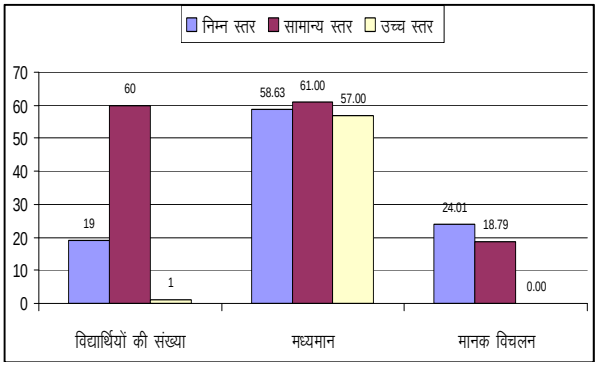

(सारणी–4)

उपइकाई स्वीकृति एवं देखभाल (Acceptance and Caring) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	थ	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	92.57	46.28	.114	.892
आन्तरिक	77	31218.42	405.43		

Fcal < Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है, तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है, जिसका कारण छात्रों का शोध के प्रश्नों के उत्तरो को गंभीरता से ना दिया जाना हो सकता है, या तो वे उत्तर देने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे।

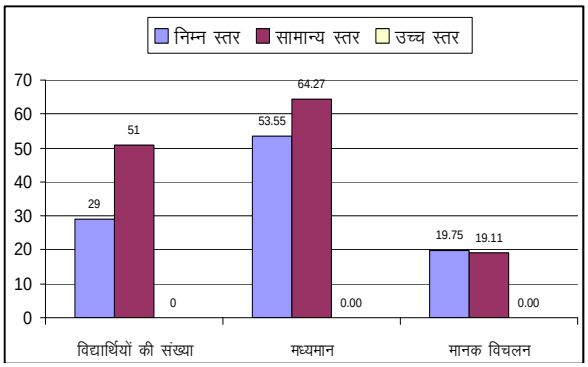

(सारणी–5)

उपइकाई स्वतन्त्रता (Independence) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	1	2125.66	2125.66	5.681	.020
आन्तरिक	78	29185.33	374.17		

Fcal> Ftab
'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है, तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

(सारणी–6)
उपइकाई सक्रिय मनोरंजन क्रियाये (Active Recreational Orientation) के आधार पर उच्च,मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

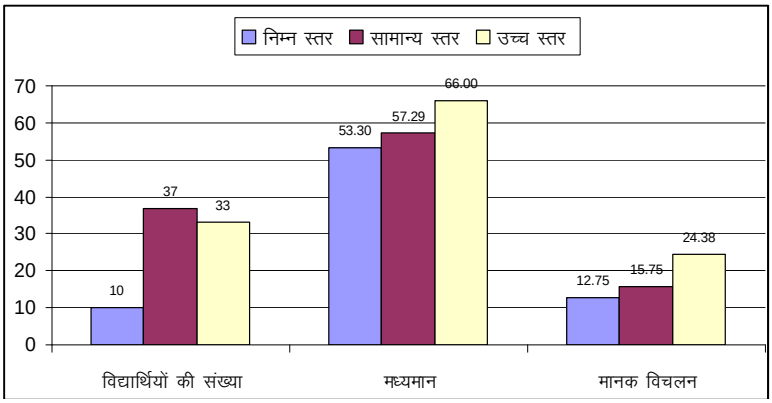

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	1895.16	947.58	2.48	.90
आन्तरिक	77	29415.83	382.02		

Fcal> Ftab
'एफ' का मान सारणी मान की तुलना में काफी अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण व सृजनात्मक के मध्य सार्थक अंतर है।

(सारणी–7)
उपइकाई संगठन (Organization) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

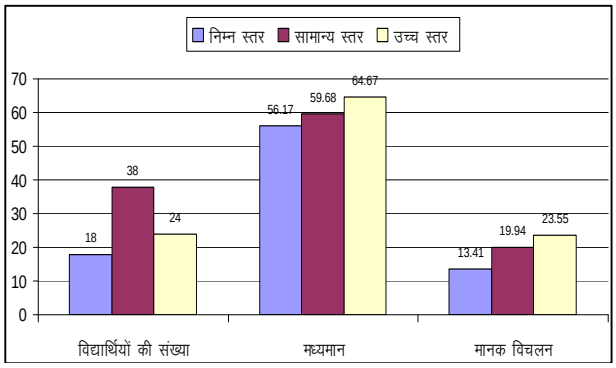

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	ર	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	778.94	389.47	.982	.379
आन्तरिक	77	30532.04	396.52		

Fcal> Ftab
'एफ' का मान सारणी मान की तुलना में काफी अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण व सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अंतर है।

(सारणी–8)
उपइकाई नियंत्रण (Control) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर की बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध

चरिता विश्लेषण तालिका

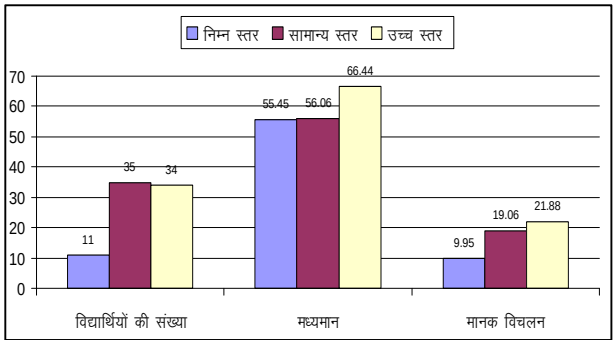

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	ર	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	2169.99	1084.99	2.87	.063
आन्तरिक	77	29140.99	378.45		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। सभी छात्राओं के पारिवारिक वातावरण स्तरों एवं परस्पर सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर है।

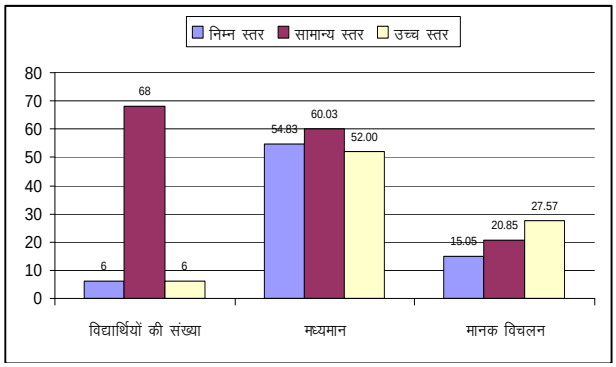

Ho 2: माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर उनके परिवार के वातावरण कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

(सारणी–1)

पारिवारिक वातावरण की उपइकाई सम्बद्धता (Cohesion) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	470.11	235.07	.531	.590
आन्तरिक	77	34066.78	442.43		

Fcal < Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

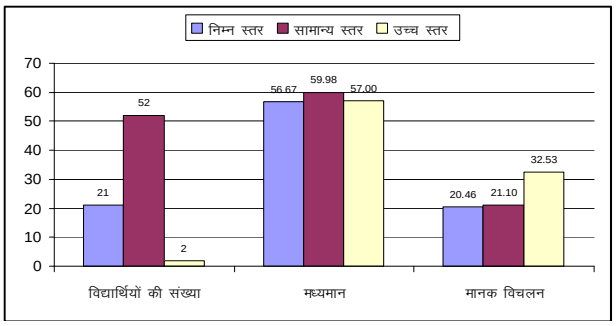

(सारणी–2)

उपइकाई अभिव्यक्ति (Expressiveness) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	177.24	88.62	.999	.820
आन्तरिक	77	34359.65	446.23		

Fcal > Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अन्तर है।

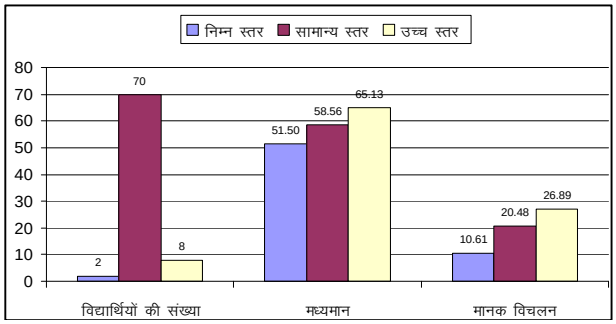

(सारणी–3)

उपइकाई द्वन्द्व (Conflict) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	426.24	213.12	.481	.620
आन्तरिक	77	34110.65	442.99		

Fcal < Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। तीनों स्तरों पर पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक अंतर नहीं है, जिसका कारण छात्रों का शोध के प्रश्नों के उत्तरो को गंभीरता से ना दिया जाना हो सकता है। या तो वे उत्तर देने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे।

(सारणी–4)

उपइकाई स्वीकृति एवं देखभाल (Acceptance and Caring) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

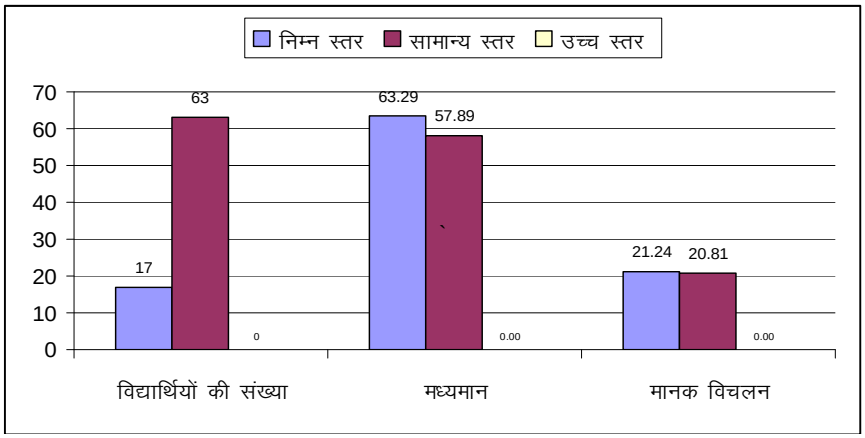

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	391.14	391.14	.893	.347
आन्तरिक	77	34145.75	437.77		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। सभी छात्रों की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर है।

(सारणी–5)

उपइकाई स्वतन्त्रता (Indenpendence) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

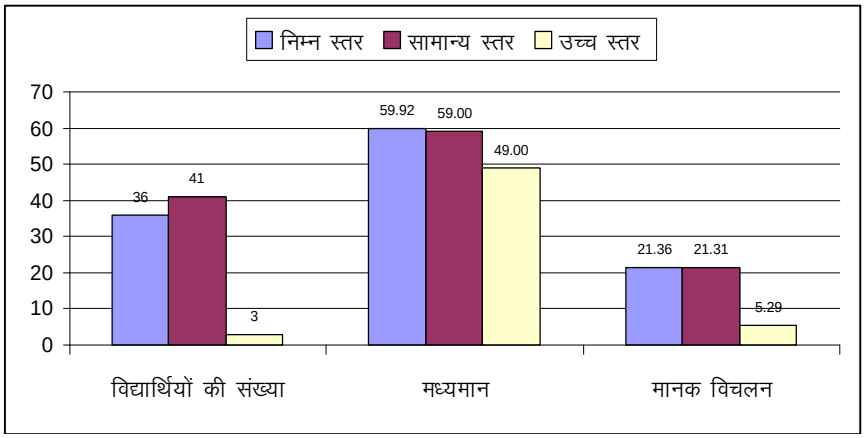

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गो का मध्यमान	७	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	330.14	165.07	.372	.691
आन्तरिक	77	34206.75	444.24		

Fcal < Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। सभी छात्रों की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है, जिसका कारण छात्रों का शोध के प्रश्नों के उत्तरो को गंभीरता से ना दिया जाना हो सकता है। या तो वे उत्तर देने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे।

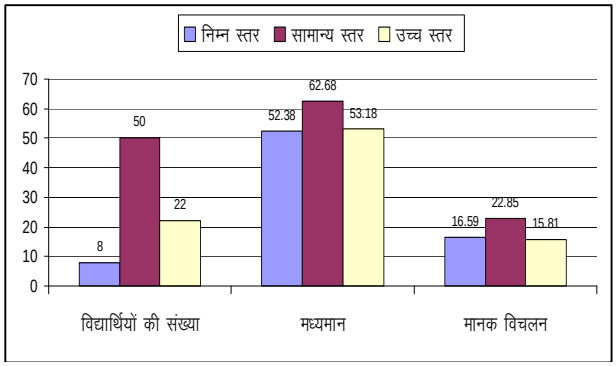

(सारणी–6)

उपइकाई सक्रिय मनोरंजन क्रियाये (Active Recreational Orientation) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	1772.86	886.43	2.083	.131
आन्तरिक	77	32764.03	425.51		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है, सभी छात्रों की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर उपस्थित है। जिस परिवार में जिस प्रकार की मनोरंजन क्रियाये उपलब्ध हो उनके आधार पर छात्रों की सृजनात्मकता में भिन्नता पायी जाती है।

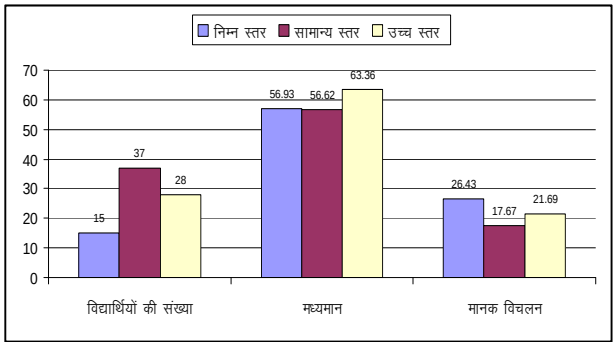

(सारणी–7)

उपइकाई संगठन (Active Recreational Orientation) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	804.82	402.41	.919	.403
आन्तरिक	77	33732.07	438.08		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है, सभी छात्रों की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर है। अर्थात संगठन के आधार पर छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर पाया जाता है।

(सारणी–8)

उपइकाई नियंत्रण (Control) के आधार पर उच्च, मध्यम व निम्न स्तर के छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं उनकी सृजनात्मकता में तुलनात्मक सम्बन्ध।

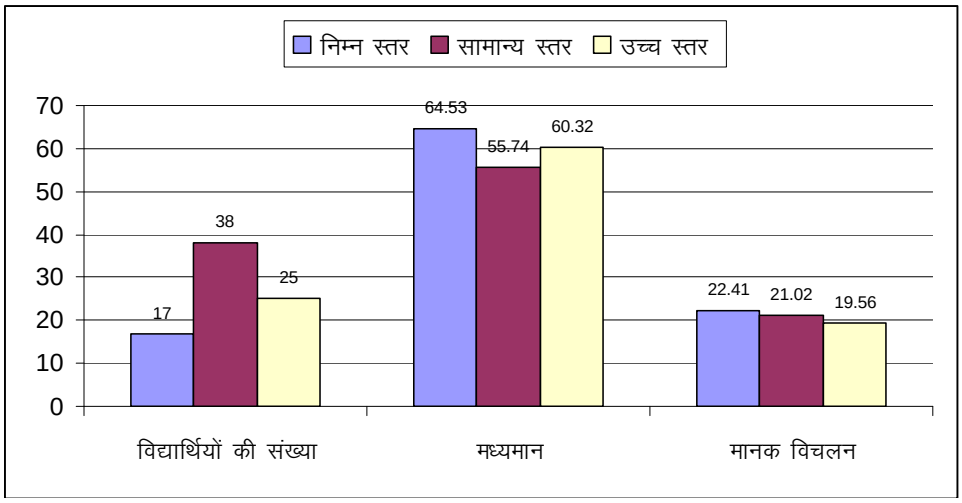

चरिता विश्लेषण तालिका

चरिता के स्रोत्र	आवृत्ति अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	F	सार्थकता स्तर पर मान
मध्य	2	967.84	483.92	1.110	.335
आन्तरिक	77	33569.04	435.96		

Fcal> Ftab

'एफ' का मान सारणी मान से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है, सभी छात्रों की परस्पर सृजनात्मकता एवं पारिवारिक स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोधकार्य में प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण व सांख्यिकी गणना के उपरान्त शोधकर्ती द्वारा परिणामों की व्याख्या के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:–

मुख्य निष्कर्ष: शोध के मुख्य परिणाम निम्नलिखित है:–

1. उच्च, मध्यम व निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया, अर्थात सभी बालकों का पारिवारिक वातावरण एक समान नहीं होता है।
2. उच्च, मध्यम व निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया, अर्थात सभी पारिवारिक स्तरों की छात्राओं की सृजनात्मकता में भिन्नता पायी गयी।

3. उच्च, मध्यम व निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया।

शोधकर्ती को अपने आँकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परिवार के वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पड़ता है।

अन्य निष्कर्ष

1. लड़कियों की सृजनात्मकता पर लड़को की अपेक्षा उच्च सम्बद्धता का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
2. उच्च अभिव्यक्ति बालक की सृजनात्मकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
3. उच्च एवं औसत सक्रिय मनोरंजन क्रियाये बालक की सृजनात्मकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
4. लिंगीय भेद के आधार पर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता एवं संस्तुतियाँ

1. बच्चों के पारिवारिक वातावरण का बच्चों की सृजनात्मकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः परिवार का दायित्व है कि वह बच्चों को उचित वातावरण प्रदान करें।
2. परिवार को ऐसे अवसर एवं परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए जिससे बालकों में सृजनात्मकता का विकास हो सकें।
3. शोध के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इसलिए परिवार के सदस्यों को ऐसे गुणों का विकास करना चाहिए जिससे बालक सृजनशील बन सके।
4. यदि परिवार में सम्बद्धता, अभिव्यक्ति, स्वतन्त्रता जैसे गुणों को को विकसित किया जाए तो अधिक सृजनात्मकता बालक विकसित किये जा सकते है, इसलिए सभी परिवारों को इन गुणो को विकास करना चाहिए।
5. परिवार बच्चो को स्वतन्त्रता प्रदान करे जिससे बालक पुरानी रूढ़िगत परम्पराओं का त्याग कर नवीन विचारों को ग्रहण कर एवं अधिक सृजनशील बन सकें।
6. अवसर देखा जाता है कि अध्यापक और माता पिता अपने बच्चो से पुराने पिटे–पिटाए उत्तर की आशा रखते है। इससे बच्चो में सृजनात्मकता विकसित नहीं होती। अतः बच्चों को उत्तर देने के लिए पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए।
7. कोई भी बालक समस्या समाधान के लिए जितने विचार एवं विविध तरीके प्रस्तुत करना चाहे कर सकता है। परंपरागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचारों, समाधान और सुझावों को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।
8. विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं सृजनात्मकता में कोई लिंगभेद आधारित अन्तर नहीं था। अतः प्रस्तुत निष्कर्ष से यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि किसी भी स्तर पर कोई लिंगीय भेदभाव न किया जाए।
9. बालकों द्वारा सर्वथा नये विचारा और बिल्कुल ही अलग प्रकार के समाधान प्रस्तुत किये जाये यह आवश्यक नहीं, वे दूसरो के द्वारा दिए गए विचारां में जितना भी फेर बदल और परिवर्तन कर सके अथवा पुराने विचारों एवं समाधानों को नवीन ढंग से प्रस्तुत कर सकें। ये भी सृजन में शामिल होता है। अतः ऐसा करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच0के, सिंह ममता, (2008) सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन्स
2. कुमार, एस0ए0 सुधीर (1992) अरूणाचल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता के सामाजिक शैक्षिक सम्बन्ध, Indian Education Review Vol 27(1) 28-106
3. कौल लौकेश (2009) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास प्रकाशन, नोएड़ा।
4. गुप्ता, सुशील, गुप्ता अलका (2010) उच्चर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबद।
5. पधान जी (1990) ''बड़ौदा शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चितन का उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में एक अध्ययन'' M.Phil, Edu, The Maharaja Sayajirao Univ. of Baroda.
6. बुच0एम0बी0 (1978–83) शिक्षा में अनुसंधान, तीसरा सर्वेक्षण टवस 1 – 2 बड़ौदा।
7. बुच0एम0बी0 (1988–92) शिक्षा में अनुसंधान, पाँचवा सर्वेक्षण टवस 1 – 2 बड़ौदा।
8. बेस्ट, जॉन, डब्ल्यू, कहान, जेम्स (2006) शिक्षा में अनुसंधान पियर्सन प्रिन्टस हाल।
9. सुधीर, एम0ए0 (1992) अरूणाचल के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता के सामाजिक शैक्षिक सम्बन्ध Indian Educational Review Vol- 27 (1) 98-106
10. सोमल0एन0 (1990) छात्र एवं छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि एवं नियोजन के मध्य सम्बन्धः पारिवारिक वातावरण कारको का प्रभाव'' Indian Journal of Psychometry and education Volume 36 (2) July 2005.
11. रेड्डी महेन्द्र (1989) ''कक्षा नौ के छात्रों में तर्क तथा सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन Phd- Edu South Gujarat Univ.